ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

भूगोल में मानववादी विचारधारा

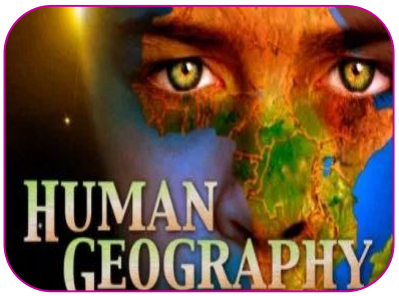

Dr. Satyabir Yadav
H.E.S.-1 (Retired)
I/C Principal, Govt. College for Women, Pali (Rewari)

प्रस्तावना

मानववादी भूगोल वह मानव भूगोल है जिसमें मानव के ज्ञान, चेतना, सृजनशीलता तथा क्रियाशिलता आदि गुणों का ध्यान केन्द्रित किया जाता है। मानववादी धारणा के अन्तर्गत स्त्री एवं पुरुष अपने विचारों कर्मों तथा अपनी तार्किक क्षमता के आधार पर अपने जीवन की परिस्थितियों को बेहतर बना सकते हैं। भूगोल में मानववादी विचारधारा का विकास फ्रांसीसी भूगोलवेताओं विशेष रूप से फेब्रे तथा वाइडल–डी–ला–ब्लास के द्वारा संभव हो सका है। संभववाद शब्द का प्रयोग सबसे पहले फेब्रे ने किया था। फेब्रे ने भौतिक पर्यावरण की अपेक्षा मानव के कार्यों को मुख्य स्थान दिया। उसने बताया कि मानव सम्भावनाओं का स्वामी होता है तथा उनके उपयोग का निर्णायक है। उसके अनुसार भौगोलिक अध्ययन में मानवीय कारक, भौगोलिक तत्वों से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। फ्रांसीसी भूगोलवेता वाइडल–डी–ला–ब्लाश को संभववाद का जन्मदाता माना जाता है। उनकी मृत्यु के बाद 1923 में उनकी पुस्तक "Principles of Human Geography" का प्रकाशन हुआ। ब्लाश ने बताया कि मनुष्य अपनी शारीरिक क्षमता व मानसिक दक्षता के आधार पर प्रकृति के विभिन्न तत्वों का अपने कल्याण के लिए अधिक से अधिक उपयोग करता है। मानव के सक्रिय सहयोग के बिना सामाजिक तथा आर्थिक विकास नहीं किया जा सकता है। अतः मानववादी भूगोल के अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मानव है।भूगोल में हमेशा ''मानव एवं पर्यावरण, मानव एवं प्रकृति, मानव एवं संस्कृति आदि शब्दावलियो का प्रयोग होता रहा है जो पुरुष प्रधान शब्दावली दृष्टिगोचर होती है। इसमें महिलाओं का स्वतंत्र अस्तित्व दिखाई नहीं देता है। प्राचीन समय में भी महिलाओं को गौण स्थान दिया जाता रहा है। भूगोल के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस प्रश्न का उत्तर जानना है कि समाज में महिलाओं की स्थिति पुरुषों की अपेक्षा गौण क्यों हैं? भूगोल में महिलावादी चिंतन में लिंग भेद का अर्थ स्त्री एवं पुरुष के अधिकारों एवं कर्तव्यों में पाए जाने वाले सामाजिक विभेदों से है। भूगोलवेताओं का यह मानना हैं कि सामाजिक व्यवस्था द्वारा स्थापित अधिकार एवं कर्तव्य सदा ही पुरुषों के पक्ष में तथा स्त्रियों के खिलाफ होते हैं। वेतनभोगी श्रमिक एवं गृहकार्य निपुण महिला पृथक–पृथक हो जाते हैं। गृहकार्य हेतु वेतन नहीं मिलता है। पारिवारिक संगठन का कार्य बिना वेतन के कराया जाता है अतः महिलाओं के गृहकार्य संबंधी योगदान का आर्थिक महत्व नहीं होने से वे गौण हो जाती हैं। सामाजिक व्यवस्था पुरुष प्रधान होने के कारण भी पुरुषों को समाज में महिलाओं की अपेक्षा अधिक सम्मान व अवसर प्राप्त होते हैं। ''इंस्टीट्यूट ऑफ ब्रिटिश ज्योग्राफर्स'' ;Institute of British Geographers) के अनुसार महिलावादी भूगोल, भूगोल की वह शाखा है जो ''सामाजिक व्यवस्था की लिंगभेद पर आधारित संरचना और उसके सामाजिक तथा भौगोलिक परिणामों पर ध्यान करती है तथा लिंगभेद से उत्पन्न दुष्परिणामों को तत्काल सुधारने तथा लिंगभेद समाप्त कर सम्पूर्ण लैंगिक समानता स्थापित करने की दिशा में सक्रिय प्रयासरत है।'' भूगोल

समाज में लिंगभेद पर आधारित व्यवस्था को समाप्त कर ऐसी व्यवस्था की स्थापना पर जोर देता है जिसमें स्त्री और पुरुष को समानता का स्थान मिले। अतः भूगोलवेताओं को लैंगिक विभेद पर आधारित समाजिक भेदभाव के आधारभूत कारणों का पता लगाना चाहिए।

समाज स्त्री एवं पुरुष को अलग–अलग उत्तरदायित्व देता है। सुरक्षा बलों में वाहन चालकों या अन्य कई रोजगार के अवसरों में महिलाओं के साथ भेदभाव किया जाता है। यदि हम शिक्षा का अनुपात देखें तो पुरुष अधिक शिक्षित होते हैं तथा महिलाएं कम शिक्षित होती हैं जबकि जनसंख्या में स्त्री–पुरुष अनुपात लगभग समान रहता है। अतः पुरुष प्रधान समाज की व्यवस्था निरन्तर बनी रहती है। अतः लिंगभेद पर आधारित भेदभाव व असमानता को समाप्त किया जाना चाहिए। जन्म देने व उनके पालन–पोषण के उत्तरदायित्व के कारण महिलाओं की भूमिका गौण हो गई है तथा पुरुष प्रधान हो गये हैं। चिंतकों का विचार है कि सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए शिशु जन्म एवं जनसंख्या वृद्धि पर महिलाओं का पूरा नियन्त्रण होना चाहिए ताकि महिलायें पुरुषों पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सकें। महिलाओं की भूमिका को प्राथमिकता मिल सके। समाज में महिलाओं को उनके सामाजिक, गुणों के आधार पर महत्व मिलना चाहिए। लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं करना चाहिए। इसी प्रकार पितृ प्रधान सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता है और समाज में उनका स्थान गौण हो जाता है। इसी प्रकार लड़कियों को लड़को की अपेक्षा घूमने–फिरने व खेलने के अवसर बहुत कम दिये जाते है। उग्र महिलावादी चिंतकों के अनुसार महिलाओं की दुर्दशा के लिए लिंगभेद पर आधारित सामाजिक भेदभाव ही इसका प्रमुख कारण है जिसके लिए पुरुष प्रधान समाज ही सबसे बड़ी बाधा है। पुरुष प्रधान समाज महिलाओं का उत्पीड़न करता है, उनको कार्य करने के कम अवसर प्रदान करता है। उनकी मान्यता है कि स्त्री एवं पुरुष के बीच पूरा–पूरा सहयोग महिलाओं की स्थिति सुधारने और बराबरी का हक दिलाने की दिशा में प्रयास किया जाना चाहिए जो परम्परागत अन्याय पूर्ण सामाजिक व्यवस्था को ठीक करके ही किया जा सकता है। सामाजिक नारीवाद चिंतक लिंगभेद को समाज में फैले अन्य प्रकार के विरोधाभासों तथा विकृतियों का एक अंग मानते हैं। उनके अनुसार महिलाओं की समस्या का सर्वांगीण अध्ययन किया जाना चाहिए तथा स्त्रियों की दशा सुधारने और उनको समाज में पुरुषों के समान स्थान दिलाया जाना चाहिए। अतः इसके लिए स्त्रियों और पुरुषों के बीच पूरा सहयोग स्त्रियों की दशा सुधारने में किया जाना चाहिए। महिलाओं को सस्ते दर पर अनेक उत्पादन कार्यों में लगाया जाता है। जैसे चाय के बागानों में चाय की पत्ती तोड़ना, सिलाइ व कढाई, विमान परिचारिका, अस्पताल में नर्स बनना आदि। महिलाओं की उत्पादन क्षमता विविधता पूर्ण है।

अतः सामाजिक चिंतकों के अनुसार पूंजीवादी औद्योगिकरण के पश्चात् सामाजिक व्यवस्था में औद्योगिक संस्थानों में वेतनभोगी कर्मचारियों तथा अधिकारियों की केन्द्रीय भूमिका स्थापित हो जाने के बाद निजी तथा सरकारी स्त्री पुरुष के स्थान एक दूसरे से भिन्न हो गये। जबकी औद्योगिकरण युग से पहले स्त्री और पुरुष के बीच जैविकीय अन्तर होते हुए भी वे परस्पर निर्भर और सहयोगी इकाइयाँ थे। औद्योगिकरण के पश्चात पुरुष कमाने वाले तथा महिलाएं बच्चों का पालन–पोषण करने तथा घर का काम करने तक ही सीमित हो गई। अतः चिंतकों का यह कहना की स्त्रियों की दुर्दशा का कारण लिंग भेद पर आधारित सामाजिक भेदभाव हैं ठीक नहीं है। वास्तव में नारियों की समस्या का मूल कारण सामाजिक व्यवस्था की पितृ प्रधानता नहीं है बल्कि पूंजीवादी श्रम उत्पादन व्यवस्था है। यू.एस.ए. में खेत व अखेत जनसंख्या पर आधारित भेदभाव की दृष्टि से नारीवादी चिंतन में जाति, आय और लिंग के आधार पर होने वाले भेदभावों को दूर करने के प्रयासों में तीव्रता आई है। सामाजिक सम्बन्धों में लिंग भेद पर आधारित पहचान कि भूमिका पर अब नई विचार धाराओं पर अध्ययन किया जाने लगा है।

मानव एक भौगोलिक अभिकर्ता है जो अपने पर्यावरण के साथ निरन्तर अन्तर्क्रिया करते हुए वह अपने आप को तथा पर्यावरण को परिवर्तित करता रहता है। मानववादी भूगोल का विकास परिमाणात्मक भूगोल के विरूद्ध प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप हुआ है। मानववादी भूगोलवेताओं का मानना है कि मात्रात्मक विधियों तथा उन पर आधारित मॉडलों द्वारा मानवीय पहलुओं जैसे सामाजिक संस्थाओं, परम्पराओं, नैतिक मूल्यों, भावनाओं और विचारों की स्पष्ट रूप से व्याख्या नहीं की जा सकती अर्थात् इन पहलुओं को नजर अंदाज कर दिया जाता है। मानववादी भूगोल के विकास में वाइडल–डी–ला–ब्लाश, ल्यूशियन फेब्रे, कार्ल–ओ–शावर, रिचार्ड हार्टशोर्न, डब्ल्यू किर्क, यी–फू–तुआन, एनी बुटीमर, गुएल्के (ळनंसाम) आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। किर्क (ज्ञपताए 1951) प्रथम भूगोलवेता था जसने मानववादी भूगोल के आधार को दृढ़ता प्रदान की तथा भूगोलवेताओं का ध्यान

आकृष्ट किया। लेकिन मानववादी भूगोल (Humanistic Geography) शब्द का प्रयोग सबसे पहले यी–फू–तुआन ने 1976 में किया। उसके अनुसार मानववादी भूगोल मानवीय विश्व के बारे में लोगों के प्रकृति के साथ सम्बन्धों, उनके भौगोलिक व्यवहार एवं स्थान, स्थिति से संबंधित उनकी भावनाएं तथा विचारों की समझ प्राप्त करता है।

"Humanities Geography achieves an understanding of the human world by studying people's relations with nature, their geographical behaviour as well as their feeling and ideas with regard to space and place."

- Tuan, 1976

प्रत्यक्षवाद, आनुभविकता तथा मात्रात्मक विधियां वैज्ञानिक अध्ययन में मानवीय ज्ञान, चेतना, मानव मूल्य, भावनाओं तथा परम्पराओं को कम महत्व देती हैं। इसके विपरीत मानववादी भूगोल यह समझने का प्रयास करता है कि मानव अपने पर्यावरण के प्रभाव को चुपचाप सहन नहीं करता बल्कि उसे परिवर्तित करने के लिए क्रियाशील रहता है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी विकास के साथ–साथ मानव की वातावरण को प्रभावित करने की क्षमता बढ़ती जाती है।

तुआन के अनुसार मानववादी भूगोल के आधारभूत पांच घटक हैं जो निम्नलिखित है–

1. मानव एक चिंतनशील प्राणी है। इसलिए भूगोलवेताओं का प्राथमिक कार्य उत्तरजीविता (Survival) के लिए भौगोलिक ज्ञान का अध्ययन करना आवश्यक है। सभी मानव समूह जो भूगोल में प्रशिक्षित नहीं होते वे भी स्थान, अवस्थिति, प्रदेश और प्राकृतिक व सांस्कृतिक संसाधनों की जानकारी से अनभिज्ञ नहीं होते। सभी प्राणियों में एक मस्तिष्क मानचित्र ;डमदजंस उंचद्ध होता है लेकिन एक समूह से दूसरे समूह के प्राणियों के व्यवहार तथा विचारों में भिन्नता पाई जाती है।
2. मानव का अपने निवास स्थान तथा क्षेत्र (Territory) से लगाव लगभग पशुओं के समान होता है। उदाहरण के लिए शेर और चीते जिस जंगल में रहते हैं उन्हें अपने स्थान तथा क्षेत्र ज्ञान होता है तथा उस स्थान से लगाव हो जाता है जिस क्षेत्र को वे अपना समझते हैं और वहां ये घुसपैठियों से अपने निवास स्थान की रक्षा करते हैं। मानव को भी अपने स्थान तथा क्षेत्र से भावात्मक रूप से लगाव हो जाता हैं और वह गाँव या क्षेत्र को अपना समझने लगता है। इसलिए मानववादी भूगोल यह स्पष्ट करने का प्रयत्न करता है कि किस प्रकार एक स्थान गहन रूप से मानवीय स्थान के रूप में विकसित हो जाता है।
3. मानववादी भूगोल भीड़–भाड़ तथा एकान्तता के अर्न्तसम्बन्धों को स्पष्ट करता है। किसी भीड़ भरे क्षेत्र में मानव तथा पशुओं का आचरण असाधारण हो जाता है जबकि सभी लोग एकान्त चाहते हैं। एकान्तता से मानव के सोचने और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती।
4. सभी लोग अपने ज्ञान तथा तकनीक के आधार पर अपनी आर्थिक गतिविधियों का संचालन करते है तथा उसके अनुसार ही अपनी आर्थिक क्रियाओं द्वारा व्यवसायिक योजनाओं का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए एक लोहार अपने ज्ञान तथा तकनीक के अनुसार लोहे से सम्बन्धित आर्थिक क्रियायें तथा व्यवसायिक योजनायें बनायेगा तो एक सुनार अपने ज्ञान तथा तकनीक के अनुासर सोने से सम्बन्धित कला या व्यवसाय या कोई अन्य आर्थिक क्रियायें करने के लिए स्वतन्त्र होगा। आर्थिक सिद्धान्तों की सहायता से नियोजक क्या निर्णय लेते हैं तथा उनके परिणाम कितने उपयुक्त हैं? इस तरह के प्रश्न मानववादी भूगोलवेताओं द्वारा पूछे जाते हैं।
5. मानववादी पद्धति के अनुसार धर्म को विश्व में सामंजस्य और भाई चारे की प्रेरणा के रूप में समझने वाला ही धार्मिक व्यक्ति होता है। अतः मानव के क्रियाकलाप धर्म द्वारा प्रभावित होते हैं।

मानववादी भूगोल की आलोचना

1. मानववादी भूगोल मुख्य रूप से पर्यवेक्षण तथा विचारों के आदान–प्रदान तथा तार्किक निष्कर्षों पर आधारित है जिसके आधार पर सिद्वान्त निर्माण या मॉडल निर्माण संभव नहीं है।

2. माननवादी भूगोल का विधि तंत्र अस्पष्ट है। मानववादी भूगोल में अनुसंधानकर्ता निश्चित रूप से यह नहीं जान पाता है कि मानववादी व्याख्या सही है या नहीं।
3. मानववादी भूगोल में भौगोलिक विश्लेषण के लिए सांखियकीय तथा गणितीय विधियों का प्रयोग नहीं किया जाता है अतः शोधकर्ता अपने परिणामों के प्रति संवेदनशील है।
4. मानववादी भूगोल पर मात्रात्मक प्रविधियां लागू नहीं हो सकती क्योंकि मानव का व्यवहार समय तथा स्थान के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।
5. मानववादी भूगोल वैज्ञानिक भूगोल का वैकल्पिक आधार प्रस्तुत नहीं करता बल्कि काल्पनिक आधार प्रस्तुत करता है।

REFERENCES:

1. Buttimer, A (1993) Geography and the human spirit : John Wopkins University press Baltimore, MD
2. Buttimer, A (1990) Geography Humanism and global change: Annals of the Association of American Geographers.80.
3. Pellegrini G.C. (Ed.) 1992 Humanistic and behavioural geography in Italy, Paeini Editore Pisa, Italy
4. Tuan, Y (1976) Humanistic geography, Annals of Association of Aamerican Geographers, 66
5. Ley, D Samuels M (eds) 1978 Humanistic geography Prospects and problems, Mauroufa press, Chicago.

Dr. Satyabir Yadav
H.E.S.-1 (Retired)
I/C Principal, Govt. College for Women, Pali (Rewari)